Imprint

DITF BULLETIN

OUR MOTTO

Sharing is Caring

DADHEECH INTERNATIONAL TRADE FOUNDATION

वर्ष–2
अंक–16
अप्रेल–2022

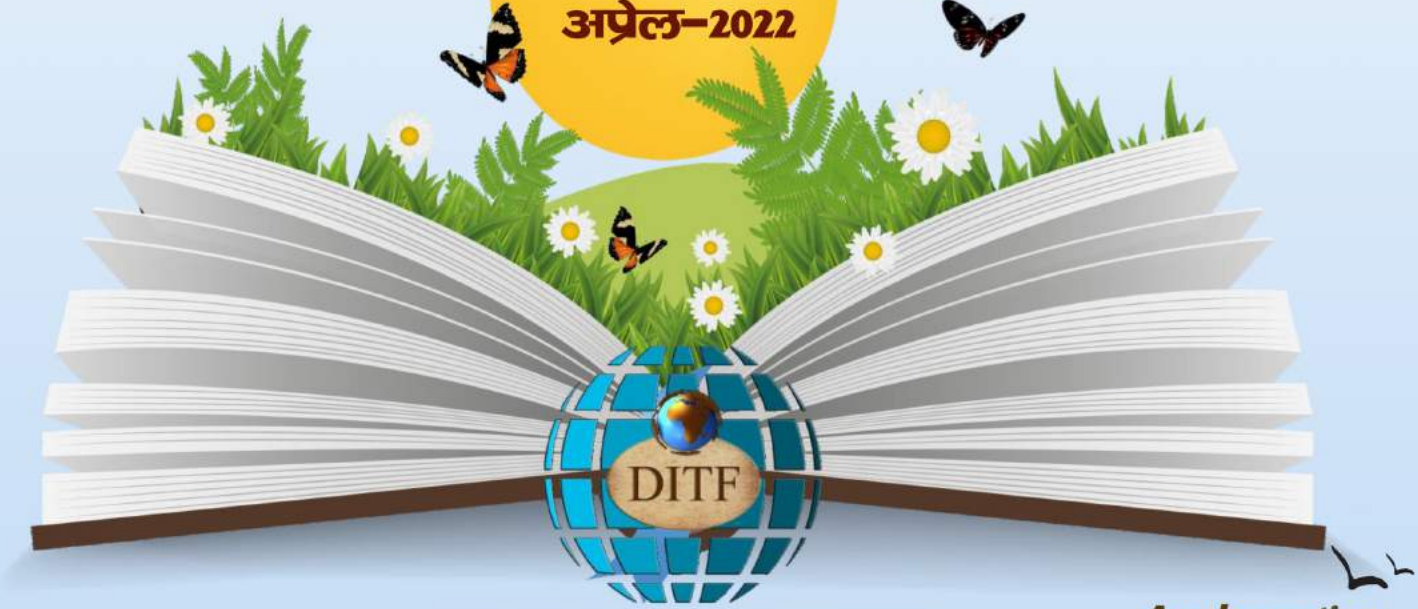

DADHEECH INTERNATIONAL TRADE FOUNDATION INITIATIVE

Amalgamation of Learning

kaleidoscope of thoughts and vision

Get The Latest Scoop

ON THIS MONTH'S TRENDS

APRIL EDITION

संपादक
डॉ. तरुणा दाधीच

फाउंडर प्रेसिडेंट
देवेश दाधीच

प्रकाशक
शोभा दाधीच

E-mail- dadheech@ditfindia.org

DADHEECH INTERNATIONAL
TRADE FOUNDATION

सम्पादकीय आलेख

सत्येन रक्ष्यते धर्मो,विद्याभ्यासेन रक्ष्यते।

मृज्यया रक्ष्यते रूपं,कुलं वृत्तेन रक्ष्यते। धर्म की रक्षा शक्ति से होती है, विद्या की रक्षा अभ्यास से होती है, रूप की रक्षा स्वच्छता से और कुल की रक्षा सदाचरण से होती है। ऐसे ही सदाचरण के एक प्रमुख उदाहरण मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के जीवन पर यह श्लोक चरितार्थ होता है। अप्रैल माह में हम श्री राम के जन्मोत्सव रामनवमी पर्व मनाने वाले हैं। नव संवत्सर , गणगौर पर्व अप्रैल माह में हर्ष उल्लास से मनाए जाएंगे। यह श्लोक परिचायक है श्रीराम के दृष्टिकोण का, धर्म की रक्षा का और अपने कुल की रक्षा का, अपने सदाचरण का। यहां मुझे दृष्टिकोण शब्द से कुछ स्मरण हो आया है कि दृष्टिकोण शब्द है क्या ? दृष्टिकोण शब्द अपने आप में एक नाद उत्पन्न करता है। दृष्टिकोण का अर्थ वह जो हमें दूसरों के प्रति धारणा निर्माण करवाता है। आज अधिकांश लोगों में अप्रसन्नता जीवन का एक अंग बन गई है। इसका सरल अर्थ है कि हम अप्रसन्न होने की तरकीब सीख गए हैं। हमें अप्रसन्नता से बाहर निकलने के लिए हमारे मन में जो एक परत जमी हुई है उसे जागरण के माध्यम से हटाना होगा और सकारात्मक दृष्टिकोण रखकर हमें जीवन पथ पर आगे बढ़ना होगा। ऐसे ही आगे बढ़ने के अवसर अभी देवेश जी बहुत सारे हमारे समुदाय के लोगों को उपलब्ध करवा रहे हैं। अभी हाल ही में प्रियंका विशाल त्रिपाठी जी भजन को रिकॉर्डिंग किया गया जिसे सबसे अधिक मात्रा में लोगों के द्वारा देखा जा रहा है। इसी के साथ सबसे महत्वपूर्ण सूचना, सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि का विषय है कि डीआईटीएफ का यूरोप चैप्टर प्रारंभ हो चुका है। यूरोप में भी डीआईटीएफ अपनी एक शाखा प्रारंभ कर चुका है। कितनी गौरव की बात है कि डीआईटीएफ ना केवल भारत में अपितु विदेशों में भी अपने दाधीच बंधुओं को आगे बढ़ाने, बंधुओं की प्रतिभाओं को निखारने हेतु प्रतिबद्ध है। इसी के साथ 14 मई, को लता मंगेशकर जी की एक म्यूजिकल नाइट का आयोजन मुंबई में किया जाएगा ।यही नहीं इनके साथ और भी वेबिनार आयोजित किए गए अभी टेराकोटा कला से संबंधित वेबिनार का आयोजन किया गया वुमन विंग ने अभी मार्च में अपना वेबिनार किया था ।तो ऐसे ही कड़ी से कड़ी जोड़ते हुए डीआईटीएफ निरंतर आगे बढ़ रहा है ।आप सभी का साथ और सहयोग इसके लिए अपेक्षित है, और आप जो हमें सहयोग प्रदान कर रहे हैं उसके लिए हम आपके आभारी रहेंगे।

शुभम् भवतु।।

संपादक की कलम से.....

डॉ.तरूणा दाधीच
मुख्य संपादक

SUBSCRIBE TO OUR VIDEOS ON YouTube

डीआईटीएफ के यू-ट्यूब चैनल को सब्सक्राइब कर आप सभी कार्यक्रम देख सकते हैं।

Shree Guru Ganpati Investment

Franchise of SMC Global Securities Limited

Contact Us for

- Investment &Trading in Stocks, Futures and Options
- NSE, BSE & Mutual Fund
- Online account opening available

Contact Details

Jitendra Dadheech
S/O Shri Ramesh Chandra Dadheech

(M) 9414354404
Address - D 206, Nai Abadi,
Kankroli Rajsamand, Rajasthan 313324

यजुर्वेद का संक्षिप्त परिचय

- बसन्त कुमार आसोपा
सेवा निवृत्त उप प्रबन्धक राजस्थान वित्त निगम,साहित्यिक एवं सामाजिक गतिविधियों में रुचि

यजुर्वेद के मंत्र गद्यपरक है। इसकी की 101 शाखाएं हैं। उनमें से अब छः शाखाएँ ही मिलती है। इन में से दो शाखाएं कृष्ण यजुर्वेद (तैत्तिरीय संहिता) एवं शुक्ल यजुर्वेद (वाजसनेयी संहिता) अधिक प्रसिद्ध है। इन दोनों में सामग्री प्रायः एक ही है। शुक्ल यजुर्वेद माध्यन्दिन संहिता में कुल चालीस अध्यायों में 1975 मंत्र है। जिनमें से लगभग 663 पद्यात्मक मंत्र यथावत ऋगवेद में से है लेकिन यहां उन का पठन गद्यात्मक होता है। यजुर्वेद के पहले उनचालीस अध्याय संस्कार एवं यज्ञीय कर्म अनुष्ठान से संबंधित है । यज्ञ चेतन सत्ता के प्रति श्रद्धा व्यक्त करते हैं। वे संगठित एवं अनुशासित कर्म के अनुष्ठान है। ये अंतःकरण को शुद्ध करते हैं। यज्ञ से काम ,क्रोध , लोभ , मोह , अहंकार और वासनाओं (इच्छाओं) पर नियंत्रण प्राप्त होता है तथा सहनशक्ति (तितिक्षा) बढ़ती है । इन प्राप्त विभूतियों से कल्याणकारी प्रयोजन सिद्ध करना भी यज्ञ कर्म के अंतर्गत आते हैं। ब्रह्म ज्ञान के मुमुक्षियों के लिये तथा इन उनचालीस अध्यायों की तात्त्विक व्याख्या के लिये (कि कर्म ज्ञान के विरुद्ध नहीं है बल्कि कर्म कैसा होना चाहिए) चालीसवां अध्याय ज्ञानकाण्ड का है। यजुर्वेद का अंतिम अध्याय होने से इसे वेदांत कहते हैं। यह अध्याय ही ईशावास्योपनिषद है । इसी केआधार पर सारे उपनिषदों को वेदांत कहलाने का गौरव प्राप्त हुवा है। यह आदि उपनिषद है । इसमें कुल अठारह मंत्र है। सत्रह मंत्र शुक्लयजुर्वेद की माध्यन्दिन शाखा के तथा एक मंत्र काण्व शाखा का है। इसके ऋषि दध्यं आथर्वण है।

यजुर्वेद के 34 वें अध्याय के प्रथम छः मंत्र (तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु - मेरा मन शुभ संकल्प वाला हो) उपनिषद कोटि के माने गये हैं । मन प्राणिमात्र के कल्याण के चिंतन से निज (मेरा)- पर (दूसरा)की संकीर्ण भावना से ऊपर उठ जाता है। सब प्राणियों में आत्मदर्शन के कारण घृणा अथवा किसी काअहित करने का भाव नहीं रहता । यजुर्वेद के 36वें अध्याय का 17वां मंत्र शांति मंत्र है। इसमें द्यो , अंतरिक्ष , पृथ्वी , जल , ओषधियों , वनस्पति , सभी देव , ब्रह्म , सर्वत्र तथा मुझमें भी शांति हो की प्रार्थना है ।

इसके 36वें अध्याय का तीसरा मंत्र गायत्री मंत्र है जिसमें हम सब की बुद्धि संमार्ग में प्रेरित हो की प्रार्थना है। इसी अध्याय का 24वां मंत्र पश्येमः शरदः शतं में सो वर्ष से भी अधिक समय तक अदीन होकर जीवित रहने की प्रार्थना है। अर्थात् मृत्यु को सतत याद रखते हुवे घर परिवार और समाज में रहते हुए निर्लिप्त भाव से शुभ कर्मों को करते हुवे मोक्ष प्राप्त करना है। अध्याय अठारह में मंत्र संख्या एक से सताइस (यज्ञेन कल्पन्ताम्) में यज्ञ से बल , सत्य , श्रद्धा , सुख , धन, यश , कृषि , शक्ति , वाणी , व्रत , तप धेनु इत्यादि की समृद्धि की प्रार्थना है।

यजुर्वेद में यज्ञ विधियों तथा देवों की स्तुतियों एवं प्रार्थनाओं को गहराई से देखने पर उनमें छिपे हुए सम्पूर्ण मानव जीवन दर्शन का ज्ञान प्राप्त होता है। जैसे एक मंत्र में सत्य को प्राप्त करने व असत्य को दूर करने की प्रार्थना है । एक अन्य मंत्र में हे जगदीश्वर ! हमें हिंसा रूपी पाप एवं हिंसक शत्रू से दूर रखो । एक मंत्र में ऋषि ने जल और ओषधियों को श्रेष्ठ मित्र होने की प्रार्थना की है। एक अन्य मंत्र में हमें अभय प्रदान कीजिए । एक मंत्र में ऋषि कहता है कि हे शिष्य ! मैं तेरी वाणी एवं सभी व्यवहारों को निर्मल करता हूं । एक अन्य मंत्र में धर्मका मार्ग सुखदायी होता है । एक जगह कहा श्रद्धा से सत्य की प्राप्ति होती है। इसीतरह अपने आराध्य की स्तुती में देवों को सत्यवादी , अहिंसक , पोषक , धनदाता , शत्रू - विध्वन्सक आदि गुणों का जगह जगह-जगह पर वर्णन है। हमें इन सांकेतिक गुणों को आत्मसात कर अपने जीवन को यज्ञमय बनाने का दर्शन प्राप्त होता है। एक स्थान पर माता पृथ्वी को नमस्कार है। मैं आपकी हिंसा न करूं आप मेरी हिंसा न करें । एक मंत्र में अग्नि से प्रार्थना है कि हे अग्नि मुझे दुराचार से हटा कर सदाचार में प्रवृत्त कर । एक मंत्र में पिता पुत्र से अपेक्षा करता हे कि हे प्राण समान पुत्र ! तूं सब के लिये कल्याकारी एवं मंगलमय बन । इसी तरह एक मंत्र में पुत्र प्रार्थना करता है कि हे जगदीश्वर ! तूं हमें हमारे पिता के समान ज्ञान दे । एक मंत्र में कन्याओं को कहा है कि हे कुमारी ! तुम ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हुए विद्याध्ययन करो । ये कुछ जीवन में उतारने योग्य यजुर्वैदिक मंत्रों के अर्थ हैं। इन्हें आचरण में लाकर हम अपने जीवन को सफल बना सकते हैं।

जैसे एक व्यक्ति घर में मुखिया , कार्यक्षेत्र में डाक्टर या इंजीनियर तथा खेल के मैदान में खिलाड़ी या कैप्टन से संबोधित होता है वैसे ही वैदिक देवता सविता , यज्ञ , विष्णु , अग्नि , वायु , इन्द्र , प्रजापति , पितर , पृथ्वी इत्यादि विभिन्न भूमिकाओं में उस ब्रह्म की ही शक्तियों के नाम है ।
यजुर्वेद से संबंधित और भी जानकारी अगले अंक में जारी रहेग

संघर्ष

-आरती जोशी
भीलवाड़ा

"संघर्ष के बिना आसान नहीं है जीना
संघर्ष ही सिखाती है जीने की कला"
"संघर्ष तो है जीवन का हिस्सा
संघर्ष के बिना अधूरा है मानव का किस्सा "
"संघर्ष से ही तो आता है जिंदगी जीने का जज्बा
संघर्ष से ही तो करता है मनुष्य अपने सपनों को पूरा"
"संघर्ष ही है जो सुल भरी राहों पर चलना सिखाता है।
संघर्ष से ही वह अपनी राह बनाता है"
"बिना संघर्ष कुछ भी आसान नहीं जग में
संघर्ष ही तो है जीवन की पहचान"।

Best wishes message from
below put in our all bulletin issues:

MANJU KAMAL PODDAR

AMFI CERTIFIED
MUTUAL FUND DISTRIBUTOR

504 D, SUMIT SAMARTH ARCADE,
B WING, AAREY ROAD, GOREGAON
WEST,MUMBAI – 400104.

9867066252
mkp0496@gmail.com

NO MATTER HOW MUCH YOU EARN

WE HAVE SAVINGS PLANS FOR EVERYONE

Financial Advisor and Health Planner
Adity Dadheech
8108973815
aditydadheech@outlook.com

ERP ENTERPRISE RESOURCE PLANNING

- Rajesh Dayama

Committed to entice new challenges, taming a passion to strive for excellence and churning out some path breaking results has been the trademark of my profile as an ICT & ERP professional throughout my career years.

People managing people in modern businesses of all sizes have to juggle several business functions. These include human resources, supply chain management, customer relationship management (CRM), and manufacturing resource planning, among other operations. It can be overwhelming to manage all these business aspects manually or independently.

It is, therefore, understandable why systems like enterprise resource planning (ERP) are growing more popular. ERP systems are designed to integrate all business functions, creating workflows and decision-making processes that are easier to manage. This leaves organizations with more time to concentrate on their core business.

WHAT IS AN ERP SYSTEM?

ERP is an acronym for enterprise resource planning, a business management software. The American multinational computer technology corporation, Oracle, defines ERP as "a type of software that organizations use to manage day-to-day business activities, such as accounting, procurement, project management, risk management and compliance, and supply chain operations."

THE MAIN CHARACTERISTICS OF THE ERP SYSTEM

An enterprise resource planning system has four primary characteristics: modular design, flexible, open and centralized database, and automatic generation of information. This software system operates in real-time, from a general database that supports all software. This results in a consistent look and feel across modules.

The primary goal of an ERP software solution is to bring all units together to achieve operational goals quickly. All enterprise processes are integrated across all the business units into a complete approach to streamline processes and information across the whole organization.

For example of how ERP uses real-time data to integrate various business processes. Example of a business that requires customers to make online orders. As soon as a new order is completed, ERP

automatically checks the price and initiates a credit check, if needed. It checks if the product is available and notifies the unit that will schedule the delivery. As soon as the order is delivered, an invoice is sent, and the bookkeeping unit can update its accounts.

In this age of the Internet of Things (IoT), where devices are constantly being connected using such technologies as edge computing, the real-time feature ensures that each business process can quickly access the information it needs. ERP's real-time feature helps to identify problems quickly helps business to take informative decision.

TYPES OF ERP SYSTEMS

There are basically three different ERP systems: on-premise software, cloud-based software, and hybrid software. The specific type any organization needs depends primarily on the enterprise's size, available computing gadgets, and the system's ability to meet the enterprise's needs.

ON PREMISE ERP SOFTWARE

As the name implies, on-premise ERP software is deployed onsite. It is controlled mostly by your enterprise after installation. This is the ERP solution you need if you want to be in total control of your ERP system's security. However, implementing this type of ERP will require that you have dedicated IT resources on your premises to handle application and server maintenance.

CLOUD BASED ERP SYSTEM

This type of ERP system is often referred to as Software as a Service (SaaS), implying that a third party manages the service. The flexible design allows your staff to store and surf through data via any gadgets with an internet connection. Usually, pricing is based on a periodic subscription.

The main disadvantage of this type of ERP is that you have to trust an ERP vendor to handle some of your sensitive data. However, it has several advantages. For example, you don't need to make a substantial initial investment to get the system. You also don't need specialized equipment or skills before implementing the system.

HYBRID ERP SYSTEM

The hybrid ERP system allows your company to combine cloud-based and on-premise ERP systems. This is a system you would choose if you want to enjoy the best of both worlds.

WHY MIGHT YOU NEED AN ERP SYSTEM?

Let's look at some of the reasons why businesses of different sizes may benefit from implementing ERP.

Sharing Information: The ERP system can automatically share crucial information across the various departments of your enterprise, and, as a result, it fosters collaboration through integrated information sharing.

IMPROVED BUSINESS PERFORMANCE: The integrated system will ensure that departments spend time managing their core business instead of trying to get the information that would help them to do so. For instance, an ERP system could improve your business's performance in sales forecasting through order tracking, revenue tracking, and purchase order generation.

EASY TO MANAGE: With the rapid growth in technology, ERP systems continue to become easier to manage and use. This is especially the case for enterprises that may not have the skills or resources to integrate their systems. For large enterprises, ERP can reduce the resources required to run disjointed systems.

Standardized Reporting: If you want your organization to communicate to the market, you will need everybody in the organization to be reading from the same book. ERP will ensure that the information delivered by your organization is coherent.

विश्वास

-अभिलाषा दाधीच

ये शब्द हमने अपने जीवन में अनगिनत बार सुना होगा ! विश्वास और आस्थाओं के कई सच्ची कहानियाँ आज भी मेरे जेहन में जिंदा है! पर क्या आपने कभी सोचा है कि इसके मायने क्या है ? जब आप पूरी दृढ़ता के साथ कहते हों कि....." हाँ मुझे विश्वास है, मैं ऐसा कर सकता हूँ। तो क्या आपने अपने अंतर मन की दृढ़ता को महसूस किया है, इस वाक्य के साथ! सही मायने में देखा जाए तो विश्वास सिर्फ एक शब्द या भाव नहीं.... इसी के सहारे किश्तियां तुफानों को पार कर जाती है.... बड़े बड़े सागर में, इसी के सहारे पर्वत जीत लिए जाते हैं...! ये एक नैसर्गिक गुण है हमारे जीवन का, जिससे बहुतेरे लोग अनभिज्ञ हैं! आश्चर्य !! जीवन की किन्हीं विसंगनतियों में जब आप आशाहीन विचारों से ओत प्रोत होते हैं...तो यही विश्वास भोर के सूरज की तरह आपके मानस में उजास को भरता है,तभी तो आप अंतर्मन को सुन पाते हैं.. "सब ठीक हो जाएगा" ये शब्द विश्वास के ही तो होते है! तूफानों से भिड़े होंगे आप कई बार अपने इसी गुण के कारण...!! आप को आश्चर्य नहीं होता ....!!आपके ही जीवन के इर्द गिर्द कुछ ही लोग सफल हो पाते हैं जबकि कुछ

लोग अपना औसत दर्जे का जीवन जीते है क्योंकि सफल लोग वे लोग हैं जो अपने आप पर अनगिनत बार विश्वास करते है, अनगिनत बार वो भी निराश हुए होंगे... वो भी हारे होंगे.....टूटे होंगे....अनगिनत बार..! पर उन्होंने विश्वास ना छोड़ा एक भी बार...!!!! और हाँ, ये एक गुण उन्हें सबसे अलग बनाता है कि उन्होंने अपने आप में विश्वास करना सीख लिया हैं!! और सपनों की उड़ान अधूरी हैं तो एक बार फिर उन सपनों को भरोसे के परवाज़ दिजिए.....!!

अपने भीतर जाइए पहला और आखरी दरवाजा आपके ही भीतर हैं..... भरोसे का!!!

विश्वास करे....

सचमुच विश्वास करे...

अपने बेहतर कल पर....!!

Testimonial

जय श्री कृष्ण,

मैं प्रियंका विशाल त्रिपाठी,

फ्रॉम जलगांव, महाराष्ट्र से हाली में डी. आई. टी. एफ के देवेश अंकल जी ने म्यूजिकल भजन एल्बम बनाया। मुझे मुंबई के अंधेरी के एल.सी स्टूडियो में "हरि हरि बोल" इस भजन की रिकॉर्डिंग करने का सुनहरा मौका दिया। इस भजन से मुझे अलग पहचान मिली। यह भजन यूट्यूब पर इतना लोकप्रिय हुआ कि, 8 मार्च जागतिक महिला दिवस से होली तक मुझे कई महिला मंडल में प्रमुख अतिथि बुलाकर मेरा सम्मान किया गया। वहां एक छोटे बच्चे के माँ ने मुझे कहा कि, मेरा बच्चा मोबाइल में गेम की जगह आप का भजन सुनता है और आपसे मिलने की जिद करता है। यह सुनकर मुझे एक अनोखी खुशी मिली।हम सब बच्चों को भगवान का रूप मानते हैं। मुझे ऐसे लगा सबका हुनर पहचान कर सबको बड़ा प्लेटफार्म देना देवेश अंकल जी के इस नेक काम में मानो उन्हें भगवान का साथ मिल गया हो, आप सब डी.आई.टी.एफ से जुड़े और अपने सपनों को नई उड़ान दे।

धन्यवाद!

DITF

DADHEECH INTERNATIONAL TRADE FOUNDATION

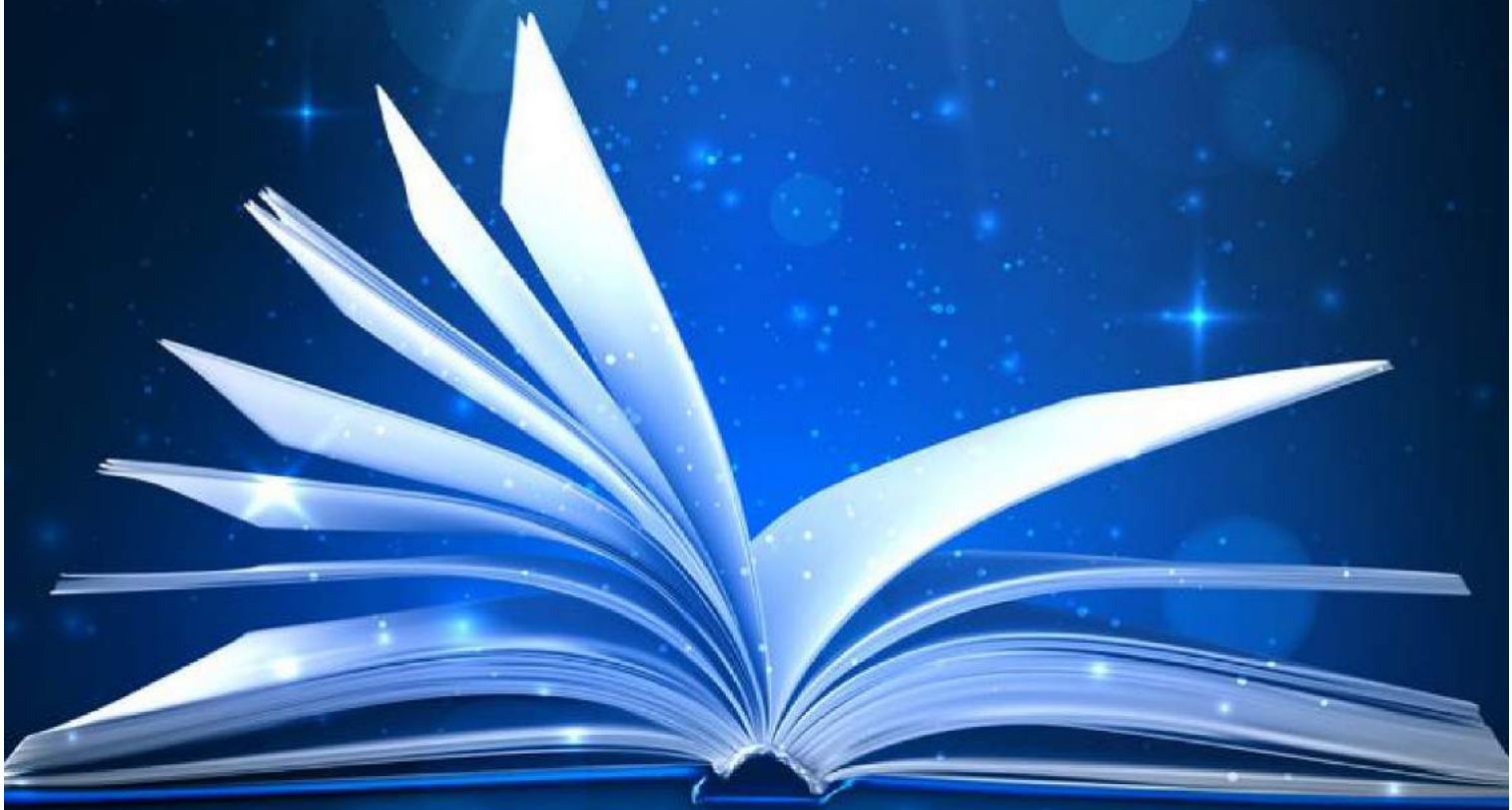

सम्मानीय बन्धुओं से आग्रह है बुलेटिन के लिए अधिक से अधिक रचनाएँ प्रेषित करें।

यह पत्रिका निःशुल्क है, परिजनों को भी भेजें और नए पहलुओं से परिचय करवाएं।

E-mail- ditfindia@gmail.com

YASHRAJ CREATIONS, 98294 46940